IJARSCT

International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology

International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal

ISSN: 2581-9429

Volume 6, Issue 1, February 2026

Impact Factor: 8.2

Hkkjrh; Kku ijaijk esa T;ksfr"k

MkWa- vkuUnjke iSdjk

सहायक प्राध्यापक

शासकीय आर.बी. एन. ई. एस. पी. जी. कालेज, जशपुर नगर (छ.ग.)

'kks/k lkjka'k %&

भारतीय ज्ञान परंपरा में ज्योतिष को 'वेदांग' माना गया है। इसे 'वेदस्य चक्षुः' अर्थात् वेदों की आँख कहा जाता है, क्योंकि जिस प्रकार आँखें मार्ग दिखाती हैं, उसी प्रकार ज्योतिष काल (समय) का बोध कराकर यज्ञ और अनुष्ठान के सही समय का निर्धारण करता है। भारतीय परंपरा पर विचार करते समय यह ध्यान रहे कि हमारे यहां एक ही विद्वान के नजरिए में अंतर्विरोधी विचार होते हैं। खासकर ज्योतिषशास्त्र के विद्वानों में यह लक्षण साफतौर पर देखा जा सकता है। इसलिए हमें अंतर्विरोधी विचारों में से विज्ञान और अंधविश्वास को अलग करने की कला या विवेक विकसित करने की जरुरत है।

eq[; 'kCn :—भारतीय, ज्ञान परंपर, ज्योतिष, विज्ञानसम्मत, प्रतिक्रियावादी, गणित, पुरोहितगण आदि।

izLrkouk %&

ज्योतिष के सवाल इसलिए भी प्रासंगिक हैं क्योंकि फासिस्ट और प्रतिक्रियावादी ताकतें ज्योतिष निर्मित मूल्य संरचना , मूल्यबोध और अविवेकवादी परंपरा का जमकर दोहन कर रही हैं। वे कह रहे हैं कि मोदी के ग्रहों के फल के कारण वे पीएम बने हैं,इस तरह संघी लोग और उनके मददगार ज्योतिषीगण भाग्य के भरोसे पीएम बनने या अभीप्सित लक्ष्य पाने का संदेश दे रहे हैं, जो कि एकदम गलत है।

मोदी के पीएम बनने में कुंडली के ग्रहों की कोई भूमिका नहीं है। किसी भी व्यक्ति के भविष्यनिर्माण में ग्रहों की कोई भूमिका नहीं होती।यह पूरी तरह से मिथ्याचार है जो अविवेकवाद का अंग है। इस तरह के विचारों से संघर्ष करने की जरुरत है। उनसे वैचारिक संघर्ष करने लिए विज्ञानसम्मत पुराने विचारों को पुरानी अविवेकवादी परंपरा से अलगाने की जरुरत है।

खासकर इन दिनों आरएसएस का जिस तरह का वैचारिक तांडव चल रहा है उसमें अविवेकवादी भारतीय परंपराओं का ये लोग जमकर दुरुपयोग कर रहे हैं। भारत की अविवेकवादी परंपराएं आज फासिज्म का सबसे बड़ा वैचारिक अस्त्र हैं।

भारतीय जनता में ग्रहण को लेकर अनेक किस्म के भ्रामक विचार सदियों से चले आ रहे हैं,उनमें प्रमुख है ग्रहण में राहु की भूमिका। ब्रह्मगुप्त ने ब्रह्म सिद्धांत में लिखा— कुछ लोग मानते हैं कि ग्रहण का कारण राहु नहीं है लेकिन यह एक मूर्खतापूर्ण विचार है क्योंकि वही ग्रहण करता है और आमतौर पर लोग यह कहते हैं कि राहु ग्रसता है। वेद, जोकि ब्रह्मा के मुख से निकली ईश्वरीय वाणी है ,बताते हैं कि राहु ग्रसता है।मनु द्वारा प्रणीत मनुस्मृति में भी इस बात का समर्थन किया गया है।

इसके विपरीत वराहमिहिर,श्रीषेण,आर्यभट और विष्णुचन्द्र का मत है कि ग्रहण का कारण राहु नहीं,बल्कि चन्द्रमा और पृथ्वी की छाया इसका कारण है। यह बात जनसाधारण की मान्यता के एकदम विपरीत है। अलबरुनी ने लिखा — ष्ब्रह्मगुप्त

DOI: 10.48175/IJARSCT-31200A

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 1, February 2026 Impact Factor: 8.2

,गणित–ज्योतिष के मामले में अद्वितीय है.... वह सच से कतराता है और अपने समय में प्रचलित ढ़ोंग–पाखंड का समर्थन करता है। ६

गणित का सवाल इसलिए उठाया है क्योंकि हमारे देश में प्रतिक्रियावादी भी विज्ञान के विकास पर जोर देते हैं साथ में सभी किस्म के अंधविश्वासों का प्रचार करते हैं। संघीवैज्ञानिक तो इन दिनों विज्ञान कॉग्रेस में जाकर केन्द्र सरकार की मदद से प्राचीनकाल में विज्ञान की खोजें पेश कर रहे हैं। असल में शासक और शासित के बीच में गणित के अनुसंधान और सिद्धांत कोई सामाजिक संघर्ष पैदा नहीं करते। लेकिन सच यह है संघर्ष तो रहा है। गणित और प्राचीन विज्ञान का पुरोहितवर्ग और ब्राह्मणों के एक वर्ग ने जमकर दुरुपयोग किया है।

मसलन, गणित के दुरुपयोग का सबसे अच्छा उदाहरण है जन्मकुंडली,वर्षकुंडली,फलित ज्योतिष आदि की पूरी प्रणाली। पंचांग निर्माण, अंधविश्वासों के प्रचार–प्रसार और पुनर्जन्म की धारणा को जनप्रिय बनाने के लिए इसका दुरुपयोग किया गया। इसके अलावा चन्द्रगहण और सूर्यग्रहण के नाम पर अंधविश्वासों की पूरी श्रृंखला निर्मित करने के लिए इस शास्त्र का दुरुपयोग किया गया। गणित को पहले फलित ज्योतिष और बाद में कर्मकांड और अंधविश्वासों से जोड़ा गया। इसे सुंदर नाम ष्वेदांग ज्योतिषष् दिया गया। खासकर गुप्तकाल में ज्ञान की इस शाखा में प्रतिक्रियावादी विचारों का तेजी से प्रवेश होता है। जिसके कारण अंधविश्वास और धर्म के लिए ज्योतिषियों ने अनेक किस्म की रियायतें प्रदान कीं।

हमारे ज्योतिर्विदों में आर्यभट (पांचवीं सदी),वराहमिहिर (छठी सदी) और ब्रह्मगुप्त (आठवीं सदी) के नाम उल्लेखनीय हैं। आर्यभट ने वैज्ञानिक नजरिए से ज्योतिष का प्रतिपादन किया और आजीवन वैज्ञानिक नजरिए पर टिके रहे। उन्होंने फलित ज्योतिष का जमकर विरोध किया। उसकी वैज्ञानिक वैधता को नामंजूर किया। लेकिन वराहमिहिर और ब्रह्मगुप्त ने गणित परंपरा को बचाए रखकर फलित ज्योतिष की परंपरा के साथ समझौता किया।

वराहमिहिर पहले ज्योतिषी हैं जिन्होंने वैज्ञानिक विचारों और प्रतिक्रियावादी विचारों में संबंध बिठाने की कोशिश की और फलित ज्योतिष में महत्वपूर्ण योगदान किया। इसके बाद ब्रह्मगुप्त तो पूरी तरह अंधविश्वासों के सामने नतमस्तक हो गए। जबकि इन दोनों (वरामिहिर और ब्रह्मगुप्त) का गणित ज्योतिष में महत्वपूर्ण योगदान है।

किसी भी अन्य देश की तुलना में प्राचीनकाल में भारत में गणित का विकास ज्यादा हुआ ,इसमें ब्राह्मणों की बड़ी भूमिका थी। खासकर अंक–लेखन में दशमलव प्रणाली की विस्मयकारी खोज सबसे मूल्यवान थी। इसे गणित में सबसे क्रांतिकारी योगदान माना जाता है। जैसाकि हम सब जानते हैं साधारण अंकों का जोड़,गुणा और भाग सारे गणितों का मूलाधार है। अकेली दशमलव प्रणाली इन गणनाओं को हर तरह से संभव करती है।

उल्लेखनीय है यूनानी लोग संख्याओं की जगह अक्षरों का प्रयोग करते थे, लेकिन भारतीय लोग हमेशा से गणित के लिए अंकों का प्रयोग करते थे। हमारे पास 18अंकों तक की गणितीय पद्धति थी।संख्याओं के अलग–अलग नाम थे। इसके अलावा भारत में अंकगणित के अलावा बीजगणित का भी विकास हुआ। इस शास्त्र के निर्माण में वेदान्तियों की भूमिका थी।

यह अकेला ऐसा विज्ञान था जिसका सतह पर जातिविशेष से संबंध नहीं था। गणित की ऊँची से ऊँची उड़ान से वर्ण व्यवस्था को कोई खतरा नहीं था। ब्राह्मणवर्ग पूर्ण शांति के साथ इसमें संलग्न रह सकता था। उल्लेखनीय है उन दिनों शूद्रों और वैश्यों को किसी भी तरह की बौद्धिक गतिविधि में शामिल होने का कोई हक नहीं था। मजेदार बात यह है गणित और फलित ज्योतिष ऊपर से देखने में अलग लगते हैं लेकिन असल में अभिन्न हैं।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 1, February 2026 Impact Factor: 8.2

संस्कृत भारती के केंद्रीय कार्यालय के नवनिर्मित भवन 'प्रणवः' के लोकार्पण अवसर पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत जी ने कहा कि अक्षय तृतीया जैसे शुभ मुहूर्त पर 'प्रणवः' कार्यालय का लोकार्पण अत्यंत आनंददायक और शुभ संकेत है। यह सत्य संकल्प है। 'प्रणवः' सृष्टि के मूल नाद का प्रतीक है और इस नाम के साथ आरंभ हुआ यह कार्य पूर्णता की ओर अग्रसर होगा। उन्होंने संस्कृत को भारत का प्राण बताते हुए कहा कि यह केवल भाषा नहीं, अपितु भारत की संस्कृति, परंपरा और जीवन–दृष्टि की आधारशिला है। भारत को समझने के लिए संस्कृत को समझना अनिवार्य है, क्योंकि इसी में हमारी ज्ञान–परंपरा, दर्शन और जीवन–मूल्य निहित हैं। संस्कृत केवल एक भाषा नहीं, अपितु भारत का प्राण है। यह हमारे विचारों, संस्कृति और ज्ञान का वह सार है, जिसे पूरी दुनिज्याज्ञान को देने की आवश्यकता है।

संस्कृत सभी भारतीय भाषाओं को जोड़ने वाली कड़ी है और इसके माध्यम से अन्य भाषाओं को भी सहजता से सीखा जा सकता है। संस्कृत में निहित ज्ञान–विज्ञान का व्यापक भंडार संपूर्ण मानवता के लिए उपयोगी है। उन्होंने कहा कि किसी भी कार्य में केवल रुचि नहीं, अपितु उसके उद्देश्य की स्पष्ट समझ, धैर्य और निरंतरता आवश्यक है। जैसे श्वास–प्रश्वास निरंतर चलता है और उसमें कोई ऊब नहीं होती, उसी प्रकार संस्कृत के कार्य को भी बिना उबते हुए निरंतर आगे बढ़ाना चाहिए।

संस्कृत सीखने के संदर्भ में उन्होंने "संभाषण पद्धति" को सबसे सरल और प्रभावी उपाय बताया। सरसंघचालक जी ने कहा कि संस्कृत को व्यवहार में लाकर, बोलचाल के माध्यम से आसानी से सीखा जा सकता है। संस्कृत संभाषण शिविर इस दिशा में अत्यंत उपयोगी हैं और इनके माध्यम से अल्प समय में भाषा का ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है। यदि हम संस्कृत को फिर से गौरव दिलाना चाहते हैं, तो इसे लोकभाषा बनाना होगा। भारत को समझने के लिए संस्कृत अनिवार्य है।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि संस्कृत भारती का कार्य सभी भाषाओं को साथ लेकर चलने का है। संस्कृत के माध्यम से अन्य भारतीय भाषाएँ और अधिक समृद्ध होंगी तथा समाज में सांस्कृतिक एकात्मता का भाव विकसित होगा। संस्कृत भाषा के पुनरुत्थान एवं वैश्विक प्रसार के लिए समर्पित संस्कृत भारती के नवनिर्मित केंद्रीय कार्यालय 'प्रणवः' का लोकार्पण अक्षय तृतीया के पावन अवसर पर सम्पन्न हुआ। लोकार्पण से पूर्व वैदिक परंपरा के अनुसार सरसंघचालक जी ने 'गावो विश्वस्य मातरः' की भावना के साथ गौमाता की पूजा–अर्चना की तथा शतचंडी यज्ञ में पूर्णाहुति प्रदान की। आचार्य सुधीर वेदपाठी, प्रो. रामराज उपाध्याय एवं प्रो. परमानंद भारद्वाज के सान्निध्य में संपूर्ण वैदिक विधि–विधान के साथ अनुष्ठान सम्पन्न हुआ।

InHk xUFk Iph %&

- शर्मा, आर.ए. (1987) 'शिक्षा अनुसंधान' आर. लाल बुक डिपो, मेरठ।
- पाण्डेय, रामसकल (1989), 'शिक्षा दर्शन' विनोद पुस्तक मंदिर आगरा–2।
- श्रीवास्तव के. एम. (1995) :शैक्षिक मापन एवं मूल्यांकन, विश्वविद्यालय बुक डिपो रीवा।
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति –2020 (यू.जी.सी.) नई दिल्ली।
- डॉ. आन.एन. तिवारी (2021) राष्ट्रीय शिक्षा नीति, जी.एच. पब्लिकेशन, इलाहाबाद।
- पंडित द्विजेन्दनाथ शास्त्री (1998): संस्कृत साहित्य विमर्श गुरुकुल वृन्दावन स्नातक शोध संस्थान दिल्ली।
- डॉ0 सिद्धेश्वर नारायण राय (1966): पौराणिक धर्म और समाज, पंचनद प्रकाशन इलाहाबाद।
- हरिदत्त वेदालंकार (1962): भारत का सांस्कृतिक इतिहास आत्माराम एण्ड सन्स दिल्ली–3 संस्करण।
- डॉ0 बलदेव उपाध्याय (1978) : संस्कृत शास्त्रों का इतिहास , शारदा मंदिर वाराणसी।